DAL Examination

(अपभ्रंश का आदि काव्य पउमचरिउ)

Paper-DAL-01

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks:100

There are 50 multiple choice questions in this paper. Attempt all questions. Each question carries 2 marks. You have to answer the question by marking A/B/C or D in the OMR Sheet supplied to you alongwitth the question paper. You must also darken the relevant option by making use of H.B. Pencil/Blue Pen/Black Pen. No. marks will be deducted for wrong answer.

यह प्रश्नपत्र कुल **50** बहु वैकल्पिक प्रश्नों का है। प्रत्येक प्रश्न **2** अंकों है। आपको प्रश्नों के उत्तर अ/ब/स अथवा द का चयन करते हु ए प्रश्नपत्र के साथ दी **OMR Sheet** में दर्ज करने हैं। साथ ही सम्बन्धित गोले को भी एच.बी. पेन्सिल/नीले बाल पैन अथवा काले बाल पैन से भरा जाना है। गलत उत्तर के लिए अंकों की कटौती नहीं की जाएगी।

1. पउमचरिउ में हनुमान की विजयों का उल्लेख है -
   (अ) सुन्दर काण्ड (ब) अयोघ्या काण्ड
   (स) विघाधर काण्ड (द) उत्तर काण्ड
2. रिट्ठनेमिचरिउ में श्लोक हैं -
   (अ) 100 (ब) 700
   (स) 500 (द) 18000
3. स्वयंभू छन्द पुस्तक में अध्याय हैं -
   (अ) 12 (ब) 20
   (स) 25 (द) 8
4. अपभ्रंश भाषा का विकास इस भाषा से हु आ-
   (अ) प्राकृत से (ब) पाली से
   (स) हिन्दी से (द) उर्दू से
5. अपभ्रंश संम्पूर्ण उत्तर भारत की जनभाषा के रुप में विकसित हो चुकी थी -
   (अ) ईसा पूर्व पाचवीं शताब्दी (ब) ईसा की तीसरी शताब्दी
   (स) ईसा की छठीं शताब्दी (द) ईसा कीग्यारहवीं शताब्दी
6. पिशल ने अपनी पुस्तक प्राकृत भाषाओं का इतिहास कब पूर्ण की -
   (अ) 1500 ईस्वी (ब) 1700 ईस्वी
   (स) 1000 ईस्वी (द) 1900 ईस्वी
7. महाकवि स्वयंभू ने पउमचरिउ की कथावस्तु को काण्डों में विभाजित करने में अनुसरण किया -
   (अ) तुलसीदास (ब) सूरदास
   (स) वाल्मीकि (द) कबीरदास
8. अन्तिम कुलकर नाभिराय के पुत्र का नाम था -
   (अ) ऋषभदेव (ब) भरत
   (स) बाहु बली (द) तोदयवाहन
9. विद्याधर वंशी अमरप्रभ ने छत्रों पताकाओं, ध्वजाओं पर चिन्ह के रूप मे अंकित करवाया -
   (अ) स्वस्तिक (ब) बानर
   (स) शंख (द) चक्र
10 समाज में प्रचलित व सर्वसाधारण द्वारा बोली जाने वाली भाषा कहलाती हैं -
   (अ) साहित्यिक भाषा (ब) साधारण भाषा
   (स) आंचलिक भाषा (द) लोकभाषा
11. अपभ्रंश भाषा में विपुल मात्रा में महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना हु ई-
   (अ) ईसा.की 8वीं शताब्दी से13वीं शताब्दी तक
   (ब) ईसा की 5वीं शताब्दी से10वीं शताब्दी तक

(स)ईसा की 8वीं शताब्दी से12वीं शताब्दी तक

(द) ईसा की11वीं शताब्दी से12वीं शताब्दी तक

12. प्राकृत कवि बडे सयाने भाषा जिन्ह हरि चरित बखाने' यह उक्ति किसकी हैं -

(अ) तुलसीदास (ब) सूरदास

(स) रेदास (द) कबीरदास

13. रिट्ठनेमिचरिउ में चरित वर्णित है -

(अ) राम का (ब) नेमिनाथ और कृष्ण का

(स) ऋषभदेव (द) महावीर

14. काव्य की शोभा में वृद्धि करने वाले तत्व का नाम है -

(अ) अलंकार (ब) छन्द्र

(स) रस योजना (द) दोहा

15. लक्ष्मण ने शम्बूक को मारकर प्राप्त किया -

(अ) यश (ब) वैभव

(स) धनुष (द) खड्ग

16. जिस प्रकार श्लोक संस्कृत का और गाहा प्राकृत का छन्द कहा जाता है उसी प्रकार दोहा अपभ्रंश का मुख्य छन्द है - यह उक्ति

(अ) राहु लसांकृत्यायन ने (ब) डा. संकटा पंरसाद उपाध्याय

(स) राजशेखर ने (द) डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी

17. चैपाई का सम्बन्ध अपभंश भाषा के इस छन्द से बताया है -

(अ) पद्दडिया (ब) अल्लिलाह

(स) वदनक (द) पाराणक

18. स्वयंभू छन्द शास्त्र के पण्डित थे, यह किसने कहा -

(अ) राहु लसांकृत्यायन ने (ब) हेमचन्द्र ने

(स) राजशेखर ने (द) डाॅ. संकटा पं्रसाद उपाध्याय

19. भुजंगप्रयात छन्द के लिए सर्वाधिक उपयुक्त रस है -

(अ) श्रृंगार (ब) विप्रलंभ

(स) वीर (द) शान

20. मात्राओं या वर्णों की संख्या का लघु, गुरू, क्रम, यति, गति आदि से निर्धारित कहलाता है -

(अ) छन्द (ब) अंलकार

(स) रस (द) रीति

21. रस सिद्धान्त के प्रर्वतक है -

(अ) मुनि जिनविजय (ब) मुनि कुलभुषण

(स) मुनि देशभुभण (द) मुनि भरत

22. रस सिद्धान्त की प्रर्वतक कृति का नाम है -

(अ) नाट्य शास्त्र (ब) संगीत शास्त्र

(स) समाज शास्त्र (द) राजनीति शास्त्र

23. विभाव, अनुभाव, संचारी भाव के संयोग से निष्पत्ति होती है -

(अ) छन्द (ब) अलंकार

(स) रस (द) प्रतीक

24. स्वयंभू को छन्दशास्त्र का ज्ञाता बताया -

(अ) राहु लसांकृत्यायन ने (ब) हेमचन्द्र ने

(स) राजशेखर ने (द) पिशल ने

25. प्रकृतिपरक बिम्बों कों भागों में बाँटा जा सकता है -

(अ) दो (ब) चार (स) सात (द) आठ

26. संवेदना के आधार पर बिम्ब के प्रकार होते है -

(अ) पांच (ब) सात (स) नो (द) आठ

27. स्वयंभू काव्य में श्रव्यबिम्बों की है -
(अ) कमी (ब) बहु लता
(स) अदृश्यता (द) इनमें से कोइ नहीं

28. डा. हर्मन जैकोबी ने अहमदाबाद के जैन ग्रन्थ भण्डार से जिस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की उसके लेखक थे -
(अ) पुष्पदन्त (ब) कनकामर
(स) घनपाल (द) वीर

29. कैकेयी माता थी -
(अ.) भरत की (ब) शत्रुधन की
(स.) लक्ष्मण की (द.) सीता की

30. महाकवि स्वयंभू ने कैकेयी के चरित्र किस रूप मे प्रस्तुत किया है -
(अ.) खलनायिका के रूप में (ब). उदात्तरूप में
(स.) संक्षिप्त रूप में (द). दुष्ट रूप में

31. विवेक जागृत होने पर कैकेयी करती है -
(अ) राम को वापस बुला लेती है
(ब.) दशरथ से वचन न लेने को कहती है
(स) प्रजा से क्षमा माँगती है
(द) पश्चाताप करती है

32. नंदनवन में सीता के जरा भी विचलित न होने पर किसके द्वारा रावण बार-बार समझाया गया -
(अ) मेघनाद के द्वारा (ब) राम के द्वारा
(स) मन्दोदरी व विभीषण के द्वारा (द) लक्ष्मण द्वारा

33. हनुमान द्वारा डाली गयी मुद्रिका को देखकर सीता हो गयी -
(अ.) उदास (ब.) दुःखी
(स.) प्रसन्न (द.) क्रोधित

34. पउमचरिउ की कौन सी संधि से सीता का वृत्तान्त आरम्भ होता है -
(अ). इक्कीसवीं (ब). दसवीं
(स.) आठवीं (द). छठीं

35. पउमचरिउ में काण्ड हैं -
(अ) 16 (ब) 5
(स) 12 (द) 18

36. मनुष्य का प्रकृति से सम्बन्ध है -
(अ) अटूट (ब.) भाई जैसा
(स.) थोड़ा-थोड़ा (द.) धृणा का

37. ''दृश्य प्रकृति मानव जीवन को अथ से इति तक चक्रवात की तरह घेरे रहती है '' यह कथन है -
(अ.) रामचन्द्र शुक्ल (ब.) डॉ. इन्द्र बहादुर सिंह
(स.) मैथिलीषरण गुप्त (द.) प्रेमचन्द

38. पउमचरिउ के यात्रा वर्णन में वर्णन किया गया है -
(अ.) यात्रा में अनुभूत तथ्यों का (ब.) बिम्ब योजना
(स). प्रतीक योजना (द). अलंकार योजना

39. यात्रा वर्णन में कल्पना की अपेक्षा वर्णन होता है -
(अ). छन्द का (ब). रस का
(स.) यथार्थ का (द.) प्रतीक का

40. पउमचरिउ की यात्रा वर्णन के मुख्य रूप से भाग हैं -
(अ) पाँच (ब.) दो
(स) सात (द). नो

41. विशल्या पुत्री थी -

(अ.) दशरथ की (ब.) भरत की

(स.) जनक की (द) . द्रोणाचार्य की

42. समाज की विभिन्न स्थितियों - परिस्थितियों का उसके आचार-विचारों एवं व्यवहारों का मिश्रित वर्णन होता है -

(अ.) यात्रा-वर्णन में (ब.) छन्दों में

(स.) बिम्ब-विधान में (द.) इनमें से कोई नहीं

43. अव्यय के प्रकार के होते हैं -

(अ.) तीन (ब) पाँच

(स.) सात (द) दस

44. तेत्थु, केत्थु, कहिं आदि कौनसे अव्यय हैं -

(अ.) प्रकारवाची (ब.) स्थानवाची

(स). कालवाची (द.) विविध अव्यय

45. काल का बोध करानेवाले शब्द कहलाते हैं -

(अ). छन्द (ब.) प्रकारवाची अव्यय

(स.) कालवाची अव्यय (द.) अलंकार

46. एम, केम, जेम आदि अव्यय अन्तर्गत आते हैं -

(अ.) अलंकार (ब.) बिम्ब

(स.) रस (द.) प्रकारवाची अव्यय

47. तेत्थु/ तहिं/तेत्तहिं/ तउ का हिन्दी अर्थ है -

(अ.) वहाँ (ब.) सब स्थानों पर

(स). दूसरे स्थानों पर (द) एक ओर

48. थोडे .शब्दों में अधिक अभिप्राय प्रकट करनेवाली उक्ति को कहते हैं -

(अ). सूक्ति (ब). मुहावरा

(स). लोकोक्ति (द.) दोहा

49. सूक्ति साहित्य का है -

(अ). विकार (ब). शृंगार

(स.) रूप (द). हिस्सा

50. पउमचरिउ के रचयिता स्वयंभू ने किस व्यक्ति के आग्रह पर इस ग्रंथ की रचना की थी -

(अ.) कनकामर (ब.) धनंजय

(स.) पुष्पदंत (द.) दशरथ

51. स्वयंभू की प्रकाशित रचनाएँ है-

(अ) पउमचरिउ व स्वयंभू छन्द (ब) रिट्ठनेमिचरिउ

(स) स्चयंभू व्याकरण (स) पउमचरिउ

52. रिट्ठनेमिचरिउ में काण्ड़ हैं -

(अ) 16 (ब) 4

(स) 12 (द) 18

53. स्वयंभू के प्राप्त ग्रन्थों में रिट्ठनेमिचरिउ का आकार है -

(अ) सभी के बराबर (ब) छोटा

(स) बड़ा द) मध्यम

54. डॉ. हर्मन जैकोबी को मिले दूसरे ग्रन्थ का नाम हैं -

(अ) नेमिनाथ चरिउ (ब) करकंडचरिउ

(स) सुदर्शन चरिउ (द) पउमचरिउ

55. डा. हर्मन जैकोबी ने अहमदाबाद के जैन ग्रन्थ भण्डार से जिस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की उसके लेखक थे -

(अ) पुष्पदन्त (ब) कनकामर

(स) धनपाल (द) वीर

56. अपभ्रंश साहित्यकी खोज का समय था -

(अ) सन् 1800 (ब) सन् 1700

(स) सन् 1000 (द) सन् 1915 से 1930

57. पउमचरिउ के अनुसार ध्यान के परिणाम स्वरूप रावण को विद्याएं सिद्ध हुई-

(अ) 40 (ब) 50

(स) 1000 (द) 500

58. वानरवंशी राजा सूर्यरज के पुत्र नाम था-

(अ) नील (ब) नल

(स) हनुमान (द) बालि

59. विद्याधर श्रीकंठ के वंश का नाम है -

(अ) राक्षस वंश (ब) देव वंश

(स) दैत्य वंश (द) वानर वंश

60. महाकवि कविराज कविराज चक्रवर्ती आदि उपाधियों से किसे सम्मानित किया गया है -

(अ) धनपाल (ब) वीर

(स) स्वयंभू (द) रइधू

61. अन्तर्कथाएँ जन सामान्य के लिए है-

(अ) शिक्षा का माध्यम (ब) दुःख का माध्यम़

(स) आपस में जोडने का माध्यम (द) मतभेद का माध्यम़

62. भरत क्षेत्र स्थित है -

(अ) जम्बूद्वीप के पूर्वी भाग में (ब) जम्बूद्वीप के पश्चिमी भाग में

(स) जम्बूद्वीप के उत्तरी भाग में (द) जम्बूद्वीप के दक्षिणी भाग में

63. स्वयंभू की अद्भुत कल्पना शीलता,मौलिकता तथा सौन्दर्यबोध का परिचय उसके काव्य में इस तत्व से प्राप्त होता है -

(अ) अलंकार (ब) छन्द्र

(स) रस योजना (द) दोहा

64. कालिदास उपमा अलंकार के लिए प्रख्यात हैं, स्वयंभू किस अलंकार के लिए प्रख्यात हैं -

(अ) उत्प्रेक्षा (ब) अनुप्रास

(स) तद्गुण (द) यमक

65. पद और वाक्य में वर्णों की आवृति किस अलंकार में होती है -

(अ) उत्प्रेक्षा अलंकार (ब) अनुप्रास अलंकार

(स) श्लेष अलंकार (द) यमक अलंकार

66. प्रत्येक वर्णिक छन्द में वर्णों की संख्या होती है -

(अ) अनिश्चित (ब) निर्धारित

(स) उल्टी-सीधी (द) नहीं होती है

67. छन्द शास्त्र के अनुसार वर्ण के प्रकार होते हैं -

(अ) चार (ब) पाँच

(स) दों (द) सात

68. छन्द में यति का अर्थ है -

(अ) वर्ण (ब) स्वर

(स) लघु (द) विराम

69. छन्द के चरण के अन्त में आनेवाली एक जैसी ध्वनि या एक से वर्णों की आवृत्ति को कहते हैं -

(अ) यति (ब) गति

(स) तुक (द) विराम

70. जिस छन्द के प्रत्येक चरण की मात्राओं की संख्या निर्धारित हो उसे कहते हैं -

(अ) वर्णिक छन्द (ब) मात्रिक छन्द

(स) घत्ता (द) विराम

71. स्वयंभू को काव्य एवं जीवन का पर्यवसान इस रस के साथ इष्ट प्रतीत होता है -

(अ) शृंगार (ब) रौद्र

(स) वीर (द) शान्त

72. काव्य में रस के अंग माने गये हैं -

(अ) दो (ब) नौ

(स) चार (द) सात

73. साहित्य में रस का मुख्य तत्व है -

(अ) स्थायी भाव (ब) विभाव

(स) अनुभाव (द) संचारी भाव

74. साहित्य में रस माने गये हैं -

(अ) पांच (ब) नौ

(स) सात (द) दस

75. काव्य में जहाँ शीतलता, दाहकता, कठोरता तथा रुक्षणता दिखायी का भाव हो, वह बिम्ब होता है -

(अ) दृश्य बिम्ब (ब) आकाशीय बिम्ब

(स) स्पर्श बिम्ब (द) जलीय बिम्ब

76. पर्वतों, वनों, वृक्षों और फलों पर लक्षित बिम्ब होते है -

(अ) पार्थिव बिम्ब (ब) आकाशीय बिम्ब

(स) तैजस बिम्ब (द) जलीय बिम्ब

77. प्राकृतिक बिम्बों के अतिरिक्त स्वयंभू ने इस बिम्ब की योजना भी की है -

(अ) स्पर्श बिम्ब (ब) घ्राण बिम्ब

(स) तैजस बिम्ब (द) मानवेतर बिम्ब

78. महाकवि स्वयंभू विरचित पउमचरिउ में श्लोक है -

(अ). पाँच हजार (ब). सात हजार

(स.) नौ हजार (द.) बारह हजार

79. पउमचरिउ में स्वयंभू ने अपने पात्रों को चित्रित किया है -

(अ). साधारण मनुष्य रूप में (ब.) दैवीय रूप में

(स.) आदि मानव रूप में (द). पशुरूप में

80. स्वयंभू पात्रों के माध्यम से प्रतिबिम्बित करना चाहते हैं -

(अ) साहित्य को (ब) समाज को

(स.) भाषा को (द.) देश को

81. रचनाकार अपने युग का प्रतिनिधित्व करता हु आपात्रों को प्रस्तुत करता है -

(अ.) विशाल रूप में (ब). सूक्ष्म रूप में

(स.) युगानुरूपमें (द.) देव रूप में

82. महाकवि स्वयंभू ने काव्य में पात्रों को समय, विचारधारा और आस्था के अनुसार रूप प्रदान किया है -

(अ). दीन रूप (ब). तुच्छ रूप

(स.) विशाल रूप (द.) विशिष्ट रूप

83. स्वयंभू ने पउमचरिउ में सीता का दैवीय गुणों से सम्पन्न काल्पनिक चित्रण न करके इस रूप में चित्रण किया है -

(अ). स्वभाविक गुण-दोषों से युक्त (ब). सम्पूर्ण दोषों से रहित

(स.) दोष युक्त (द.) इनमें से कोई नहीं

84. पउमचरिउ में मन्दोदरी का चरित्र बताया गया है -

(अ.) क्रोधित (ब). डरपोक

(स.) वीर (द.) विविधताओं से पूर्ण

85. पउमचरिउ के पात्र अपने दायित्वों का निर्वाह करने के उपरान्त प्रवृत्त होते दिखाये गये हैं -

(अ.) अधर्म में (ब). बैचेनी में

(स.) धर्म में प्रवृत्त (द). दुःख में

86. पउमचरिउ में प्राप्त प्राकृतिक दृष्यों को देखकर स्वयंभू का प्रकृति के प्रति प्रकट होता है -

(अ.) क्रोध (ब.) घृणा

(स.) भय (द) प्रेम

87. स्वयंभू के पउमचरिउ में अनेक स्थलों पर खाद्य सामग्री, हथियार एवं मंगल तूर्यों का वर्णन किया गया है -

(अ.) उद्दीपन रूप में (ब). आलम्बन रूप्प में

(स.) गणनात्मक रूप में (द). प्रतीक रूप में

88. वनवास काल में राम ने सीता को वृक्षों का तीर्थंकरों के केवलज्ञान के साथ सम्बन्ध बताकर प्रकट किया है -

(अ.) पूज्य भाव (ब) उपेक्षा भाव

(स.) प्रेम भाव (द). अनादर भाव

89. स्वयंभू ने पउमचरिउ में नीति आदि के उपदेष देने के लिए सहारा लिया है -

(अ.) भाई का (ब.) पुत्र का

(स.) छन्द का (द.) प्रकृति-चित्रण का

90. पउमचरिउ के अनुसार सार्थक यात्रा के प्रकार होते हैं -

(अ.) दस (ब.) चार

(स.) बारह (द.) पन्द्रह

91. अतीत के भोगे हु एदृष्यों को यात्रा वर्णन में इस शैली में प्रस्तुत किया जाता है -

(अ.) अभिधा (ब.) व्यंजना

(स.) लक्षणा (द) चित्रोपम शैली

92. राम-लक्ष्मण-सीता मनोरथ नाम के रथ पर आरूढ़ होकर स्वेच्छापूर्वक किस वन में भ्रमण करते हैं -

(अ) नन्दन वन (ब.) स्मृति वन

(स.) दण्डक वन (द.) मलयवन

93. पउमचरिउ के अनुसार रावण द्वारा सीता का हरण होता है -

(अ.) अयोध्या में (ब). मिथला में

(स.) दण्डक वन में (द.) धानुष्क वन में

94. दो राजपुरुषों और एक राजमहिषी का वन्य जीवन की परिस्थितियों में सामान्य नर-नारी की भाँति दिनचर्या का स्वयंभू ने वर्णन किया है

(अ) हृदयस्पर्षी (ब) हास्यास्पद

(स) सामान्य (द) रोमांचित

95. कहन्तिउ/कउ अव्यय है -

(अ.) प्रकारवाची (ब.) स्थानवाची

(स.) कालवाची (द.) विविध

96. पासु,/पासे का हिन्दी अर्थ है -

(अ.) कहाँ पर (ब.) वहाँ पर

(स.) पास, समीप (द.) कहाँ से

97. जिनके रूप सभी लिंगों, सभी विभक्तियों और सभी वचनों में एक समान रहते हैं, उनको कहते हैं -

(अ.) संज्ञा (ब). सर्वनाम

(स.) कृदन्त (द). अव्यय

98. अण्णेत्तहे अव्यय है -

(अ.) स्थानवाची (ब.) कालवाची

(स.) प्रकारवाची (द.) विविध

99. सव्वेत्तहे का अर्थ होगा -

(अ.) दूसरे स्थान पर (ब.) सब स्थानों पर

(स.) किसी जगह (द.) कहीं पर

100. जो वचन सुनने में सुंदर, मनोहारी और चमत्कार प्रकट करने के साथ कर्ण प्रिय हो, वे कहलाते हैं-

(अ.) पद (ब.) दोहा

(स.) सूक्ति (द.) छन्द

101. अपभ्रंश भाषा के महापुराणकार पुष्पदन्त ने स्वयंभू को स्वीकार किया है -
(अ) आचार्य रूप में (ब) उपाध्याय रूप में
(स) साधु रूप में (द)देव रूप में

102. विद्वानों के मतानुसार स्वयभू का अनुमानित समय है -
(अ) ई सन् 500 (ब) ई सन् 700
(स) ई सन् 550 (द) ई. सन् 783

103. ईसा की छठी से पन्द्रहवीं शताब्दी तक का समय अपभ्रंश भाषा का युग कहलाता है -
(अ) रजत युग (ब) स्वर्ण युग
(स) ह्रास युग (द) विकास युग

104. सन 1942 में प्रोफेसर भायाणी को पउमचरिउ का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया -
(अ) मुनि श्री जिनविजय जी ने (ब) मुनि श्री कीर्तिविजय जी ने
(स) हेमचन्द्र ने (द) राहु लसांकृत्यायन ने

105. प्रोफेसर भायाणी ने पी.एच.डी. करने के लिए काण्ड चुना -
(अ) प्रथम काण्ड (ब) द्वितीय काण्ड
(स) पंचम काण्ड (द) चतुर्थकाण्ड

106. प्रोफेसर भायाणी ने पउमचरिउ की प्राप्त तीन पाण्डुलिपियों मे से पाण्डुलिपि को श्रेष्ठ बताया -
(आ) प्राच्य शोध संस्थान पूना की पाण्डुलिपि (ब) सांगानेर से प्राप्त पाण्डुलिपि
(स) दिगम्बर जैन अतिशय श्रेत्रश्री महावीरजी से प्राप्त पाण्डुलिपि (द)गुजरात से प्राप्त पाण्डुलिपि

107. लक्ष्मण ने शम्बूक को मारकर प्राप्त किया -
(इ) यश (ब) वैभव
(स) धनुष (द) खड्ग

108. खरदूषण और लक्ष्मण के मध्य युद्ध से हु आ-
(ई) शम्बूक वध के कारण (ब) राम के कारण
(स) चन्द्रनखा के कारण (द) सीता के कारण

109. (रावणद्वारा) सीता हरण को अनुचित बताकर उसके दुष्परिणामों से रावण को अवगत करवाया -
(उ) (अ).खरदूषण ने (ब) शम्बूक ने
(स) मन्दोदरी ने (द) इन्द्रजीत ने

110. बाहु बली की कषाय समाप्त होने पर उन्हें क्या प्राप्त हु आ-
(ऊ) (अ) राज्य (ब) शंख
(स) केवल ज्ञान (द) विशाल सेना

111. ऋषभदेव कर्मों का नाश कर तीर्थंकर हु एऔर उनके पुत्र कर्मों का नाश हु ए-
(ऋ) (अ) सन्यासी (ब) सिद्ध
(स) राजा (द) विशाल सेनापती

112. पातालंका के राजा सुमाली के पुत्र का नाम था -
(ऌ) (अ) रत्नाश्रव (ब) रावण
(ऍ) (स) भानुकर्ण (द) विभीषण

113. उपमेय को उपमान मान लिया जाय,या उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाय वहाँ कोनसा अलंकार होता है -
(ऐ) अनुप्रास अलंकार (ब) सन्देह अलंकार
(ए) (स) रुपक अलंकार (द) यमक अलंकार

114. जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना/उत्कृष्ट कल्पना का वर्णन को वहाँ अलंकार होता है-
(अ) श्लेष अलंकार (ब) अनुप्रास अलंकार
(स) उत्प्रेक्षा अलंकार (द) उपमा अलंकार

115. जहाँ उपमेय में उपमान का सन्देह प्रकट किया जाय वहाँ अलंकार होता है -
(अ) अनुप्रास अलंकार (ब) सन्देह अलंकार
(स) तद्गुण अलंकार (द) उपमा अलंकार

116. प्रत्येक वर्णिक छन्द में वर्णों की संख्या होती है -

(अ) अनिश्चित (ब) निर्धारित

(स)उल्टी-सीधी (द) नहीं होती है

117. छन्द शास्त्र के अनुसार वर्ण के प्रकार के होते है-

(अ) चार (ब) पाँच

(स) दो (द) सात

118. छन्द में यति का अर्थ है -

(अ) वर्ण (ब) स्वर

(स) लघु (द) विराम

119.छन्द के चरण के अन्त में आनेवाली एक जैसी ध्वनि या एक से वर्णों की आवृत्ति को कहते हैं -

(अ) यति (ब) गति

(स) तुक (द) विराम

120.जिस छन्द के प्रत्येक चरण की मात्राओं की संख्या निर्धारित हो उसे कहते हैं -

(अ) वर्णिक छन्द (ब) मात्रिक छन्द

(स) घत्ता (द) विराम

121.प्रतिशोध जनित क्रोध से उत्पन्न रस का नाम है-

(अ) करुण (ब) शान्त

(स) हास्य (द) रौद्र

122.वैराग्य की उत्कृष्टता होने पर रस होता है -

(अ) श्रृंगार (ब) रोद्र

(स) वीर (द) शान्त

123.धर्म का प्रवाह कर्म,ज्ञान और भक्ति इन तीन धाराओं में चलता है, यह मत किसका है -

(अ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ब) हेमचन्द्र

(स) पिशल (द) भरतमुनि

124.स्वयंभू विरचित पउमचरिउ का अन्त है -

(अ) श्रृंगार प्रधान (ब) वैराग्यमूलक

(स) वीभत्सपूर्ण (द) हास्यपरक

125.आधुनिक आलोचना शास्त्र में इस तत्व को अति महत्व दिया गया है -

(अ) छन्द-सौन्दर्य (ब) बिम्ब सौन्दर्य

(स) रस-योजना (द) अलंकार

126.काव्य में कल्पना किस माध्यम से रूपायित होती है -

(अ) बिम्ब (ब) अलंकार

(स) रस (द) छन्द

127.कल्पना जब मूर्त रूप धारण करती है, तब सृष्टि होती है-

(अ) बिम्बों की (ब) अलंकारों की

(स) रस की (द) छन्दों की

128.राजा जनक ने बर्बरों -शर्बरों के विरुद्ध युद्ध में सहायता के लिए निवेदन किया-

(अ.) हनुमान से (ब.) दशरथ से

(स.) भरत से (द.) रावण से

129.किसकी सहायता से राजा जनक की धरती स्वतन्त्र हु ई-

(अ.) रावण-मेघनाद (ब.) वज्रायुध

(स.) राम-लक्ष्मण (द) . खरदूषण

130.पउमचरिउ के अनुसार दशरथ ने राम का राज्याभिषेक करके क्या निर्णय लिया -

(अ.) घूमने जाने का (ब.) मन्दिर जाने का

(स.) अन्य राज्य में जाने का (द.) वन में जाने का

131.वनवास के अवसर पर लंकाधिपति रावण ने अपहरण किया -

(अ.) सीता का (ब.) सुप्रभा का

(स.) चन्द्रनखा का (द.) कौशल्या का

132.रावण ने सीता को मनाने के लिए अपना दूत बनाकर भेजा -

(अ.) लंकासुन्दरी (ब.) चन्द्रनखा

(स.) मन्दोदरी (द.) विभीषण

133.मन्दोदरी तथा विभीषण ने रावण को बार-बार लिए समझाया -

(अ.) सीता को राजमहल ले जाने के लिए

(ब.) युद्ध के लिए

(स.) सीता को राम को वापस सौपने के लिए

(द.) सीता से विवाह के लिए

134.सीता ने हनुमान को राम के लिए दिया -

(अ.) चूड़ामणि (ब.) झूमका

(स) पायल (द.) मुद्रिका

135.पउमचरिउ के अनुसार विभीषण आदि के आग्रह पर राम-सीता-लक्ष्मण कितने वर्षो तक लंका में रहे

(अ.) दो वर्ष (ब.) छः वर्ष

(स.) चार वर्ष (द.) आठ वर्ष

136.साहित्य मानव-जीवन का है -

(अ.) सहारा (ब.) प्रतिबिम्ब

(स.) हिस्सा (द.) इनमें से कोई नहीं

137.स्वयंभू के राम जब विस्तीर्ण वन में प्रवेश करते हैं तो उन्हें विशाल वट वृक्ष दिखाई देता है -

(अ.) उपाध्याय रूप में (ब.) राक्षस रूप में

(स.) पेड़ रूप में (द.) मानव रूप में

138.स्वयंभू ने किसी अंग विशेष, कार्य विषेष को प्रभावी बनाने के लिए सहायता ली है -

(अ.) पुत्र से (ब.) छन्द से

(स.) प्रकृति के उपमानों से (द.) रस से

139.राजा प्रहलाद और उसके पुत्र महेन्द्र को पकड़ा था -

(अ.) रावण (ब.) राम

(स.) हनुमान (द.) दषरथ

140.हनुमान राजा प्रहलाद का था -

(अ.) पुत्र (ब.) भाई

(स.) नाती (द.) मित्र

141.राजा अंगारक से दधिमुख व उसकी तीन पुत्रियों की रक्षा की -

(अ.) सीता ने (ब.) कैकेयी ने

(स.) राम ने (द.) हनुमान ने

142.लंकानगरी में प्रवेष करते ही हनुमान से आकर भिड़ गया -

(अ.) मेघनाद (ब.) आषाली विद्या

(स.) अक्षय कुमार (द.) कुंभकरण

143.स्वयंभू के पउमचरिउ के अनुसार हनुमान के तीक्ष्ण और भीषण चक्र से सिर युद्ध स्थल में गिर पड़ा -

(अ.) मेघनाद का (ब.) विभीषण का

(स.) वज्रायुध का (द.) रावण का

144.कालवाची अव्यय तं का अर्थ है -

(अ.) अन्धकार (ब.) तुम्हारे

(स.) तब तक (द) तब

145.अज्जु कल्ले है -

(अ.) संज्ञा (ब.) सर्वनाम

(स.) कालवाची अव्यय (द.) विषेषण

146.कालवाची अव्यय ''णिविसेण '' का अर्थ है -

(अ.) पलभर में (ब.) तत्काल

(स.) हर क्षण (द.) प्रतिदिन

147.कन्दिवसु/ कं दिवसु शब्द है -

(अ.) संज्ञा (ब.) सर्वनाम

(स.) कृदन्त (द) . कालवाची अव्यय

148. ''पडीवा '' अव्यय है -

(अ.) विविध (ब.) कालवाची

(स.) स्थानवाची (द.) प्रकारवाची

149.वह बोलना चाहिए जो -

(अ.) मन में हो (ब.) निभ जाय

(स.) दूसरों को आहत करे (द.) स्वयं को अच्छा लगे

150.पउमचरिउ की कथा का प्रारम्भ होता है -

(अ.) भरत की दीक्षा से (ब.) तीर्थंकर महावीर के समवशरण से

(स.) बाहु बलीके चक्र से (द.) इनमें से कोई नहीं

उत्तर कुंजी

1	अ	11	अ	21	द	31	द	41	द
2	द	12	अ	22	अ	32	स	42	अ
3	द	13	ब	23	स	33	स	43	अ
4	अ	14	अ	24	ब	34	अ	44	ब
5	अ	15	द	25	स	35	ब	45	स
6	स	16	ब	26	अ	36	अ	46	द
7	स	17	ब	27	ब	37	ब	47	ब
8	अ	18	द	28	स	38	अ	48	अ
9	ब	19	स	29	अ	39	स	49	ब
10	द	20	अ	30	ब	40	ब	50	ब
51	अ	61	अ	71	द	81	स	91	द
52	द	62	द	72	स	82	द	92	स
53	स	63	अ	73	अ	83	अ	93	स
54	अ	64	अ	74	ब	84	द	94	अ
55	स	65	ब	75	स	85	स	95	ब
56	द	66	ब	76	अ	86	द	96	स
57	स	67	स	77	ब	87	स	97	द
58	द	68	स	78	द	88	अ	98	अ
59	द	69	द	79	अ	89	द	99	ब
60	स	70	ब	80	ब	90	ब	100	स
101	अ	111	ब	121	द	131	अ	141	द
102	द	112	स	122	द	132	स	142	ब
103	ब	113	अ	123	अ	133	स	143	स
104	अ	114	स	124	ब	134	अ	144	द
105	अ	115	ब	125	ब	135	ब	145	स
106	स	116	ब	126	अ	136	ब	146	अ
107	द	117	स	127	अ	137	अ	147	द
108	अ	118	द	128	ब	138	स	148	ब
109	स	119	स	129	स	139	स	149	स
110	स	120	ब	130	द	140	स	150	ब